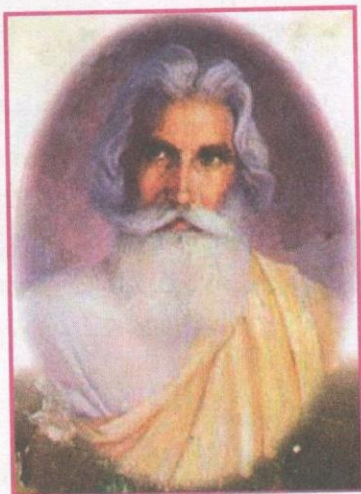


हिमालय के अमर आराधक-2

सरदार सोभा सिंह - धौलाधार के प्रांगण में

—डा० देश राज शर्मा

सरदार सोभा सिंह का जन्म 29 नवम्बर 1901 को सरदार देवा सिंह एवं बीबी अच्छरां देवी के घर श्रीहरगोबिन्दपुर, जिला गुरदासपुर (पंजाब) में हुआ। इनके दादा चढ़त सिंह महाराजा रणजीत सिंह की सेना में अश्वारोही और पिता भारतीय सेना की 22 वीं बटालियन में प्रारूपकार के रूप में कार्यरत थे। बचपन में ही इन्होंने भीति-चित्रों और मिट्टी के खिलौनों के साथ-साथ पेड़-पौधों, पशु-पक्षियों के अतिरिक्त मानवीय स्कैच बना कर अपनी कला-प्रतिभा का परिचय दे दिया था।



सरदार सोभा सिंह की धर्मपत्नी बीबी इन्द्रकौर हरचोवाल (गुरदासपुर) की रहने वाली थी और उनके साथ उनका विवाह सन् 1923 ई० को वैसाखी के दिन सम्पन्न हुआ था। बीबी इन्द्रकौर का ननिहाल जिला कांगड़ा के कोटला के समीप त्रिलोकपुर में था। इस कारण सरदार सोभा सिंह का आना-जाना त्रिलोकपुर में लगा रहता था। महान चित्रकार के हृदय पटल पर कांगड़ा घाटी के मनोहर दृश्यों की छाप पड़ने लगी। इस अन्तराल में वे अपने मित्रों नानक सिंह और पंडित मंगत राम के साथ अनेक बार माधोपुर (पठानकोट), डल्हौजी, धर्मपुर (सोलन) तथा कुल्लू के भ्रमण पर निकलते रहे। अपनी मित्र मंडली के साथ यात्राओं में इन्हें हिमाचल प्रदेश के पर्वतों, नदियों, घाटियों, सुरम्य प्राकृतिक सौन्दर्य के साथ-साथ ग्रामीण परिवेश के साथ भी एकात्म होने का सुअवसर प्राप्त हुआ। यही वह अवसर था जब वह अमृतसर के प्रीत नगर में रहते हुए सन् 1942 ई० में आयरलैण्ड की रंगकर्मी श्रीमती नोराह रिचर्ड्स द्वारा संचालित गतिविधियों से आकर्षित होकर उनकी रंगशाला अन्द्रेटा पहुँचे। धौलाधार के प्रांगण में स्थित अन्द्रेटा के अलौकिक सौन्दर्य को देखकर वे मन्त्रमुग्ध हो गए। हिम से आच्छादित चोटियों, मनभावन प्राकृतिक दृश्यों, सीढ़ीनुमा खेतों, हरे-हरे चाय के बगीचों और टेढ़ी-मेढ़ी पगडंडियों के प्राकृतिक सौन्दर्य को देखकर उन्हें ऐसा लगा जैसे सम्पूर्ण

पहाड़ी-सौन्दर्य उनके लिए कटोरे में रखकर एक साथ परोस दिया गया हो। इसी मनमोहक सौन्दर्य ने कलाकार को अन्द्रेटा में अपना आवास बनाने का अवसर दे डाला।

वर्ष 1945 ई० में सरदार सोभा सिंह लगभग एक वर्ष शिमला में भारतीय रेल विभाग में मुख्य चित्रकार के रूप में कार्यरत रहे। ऐतिहासिक शिमला-कांग्रेस के मूल पोस्टर का डिज़ाइन इन्होंने यहीं रहते हुए तैयार किया था। उस समय पंजाब की राजधानी लाहौर थी और आजीविका के लिए व्यावसायिक कला केन्द्र में कलाकार के रूप में सरदार सोभा सिंह जी का वहां आना-जाना लगा रहता था। भारत विभाजन के समय 1947 में हिंसा की काली आन्धी के कारण उन्हें लाहौर छोड़ना पड़ा। लाहौर के अनारकली में स्थापित अपने स्टुडियो, रिहायशी-मकान और अमूल्य कला-कृतियों को छोड़कर खाली हाथ पत्नी सहित दिल्ली आ गए। वहां अपनी पत्नी को अपने एक पुराने मित्र शिवनाथ मेहता के परिवार में छोड़कर वे अन्द्रेटा चले आए। उस समय पूरा देश बंटवारे व मार-काट की खबरों से भयभीत था। ऐसे में कहीं ठिकाना न मिलने के कारण रात उन्होंने चाय की हरी पत्तियां सूखाने वाले एक छोटे से कमरे में काटी। अगले दिन नोराह रिचर्डस से मुलाकात हो पर उसने नाट्य-कर्मियों के लिए बनाई झोंपड़ीनुमा चमेली निवास में उनके रहने की व्यवस्था की। उस समय सरदार सोभा सिंह ने कला-पारखी डा० एम० एस० रन्धावा के सहयोग से विस्थापित लोगों के लिए चन्दा इकट्ठा करने के लिए भारत सरकार की तरफ से पोस्टर बनाए। अम्बाला शहर में इन्होंने तस्वीरों की एक प्रदर्शनी लगाई और वहां से कुछ ऑर्डर प्राप्त कर यह अन्द्रेटा वापिस लौट आए। वे बड़े शहरों की उबाऊ ज़िन्दगी से दूर रह कर किसी एकान्त रमणीय स्थल पर कला-साधना के इच्छुक थे। इसके लिए अन्द्रेटा के स्थानीय निवासी सूंका राम भण्डारी ने ज़मीन देने की पेशकश की, जिसे सरदार सोभा सिंह ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। इस ज़मीन पर इन्होंने एक सुन्दर कुटीर का निर्माण करवाया और पानी के साथ विशेष लगाव के चलते इन्होंने वहां एक तालाब भी बनवाया। चित्रकार का यह छः दशक पुराना कुटीर अन्द्रेटा के वन में आज भी विद्यमान है।

अन्द्रेटा में रहते हुए सोभा सिंह ने रिवाल्सर, खज़ियार, धौलाधार और कांगड़ा-घाटी के अनेक लैण्डस्केप चित्रित किए, जो विश्वविख्यात हैं। इसके साथ ही हिमाचल के पहाड़ी जन-जीवन को देश विदेश में परिचित करवाने हेतु कांगड़ा-दुल्हन, पहाड़ी गद्दन आदि की तस्वीरें चित्रित कीं। इनके अतिरिक्त इन्होंने हिमाचल-निर्माता डा० यशवन्त सिंह परमार, डा० कर्ण सिंह की माता महारानी तारा देवी, जोगिन्द्र नगर की पन-बिजली परियोजना के निर्माता कर्नल बी० सी० बैट्टी आदि प्रतिभाओं के पोर्ट्रेट भी बनाए। यह हिमाचल प्रदेश का सौभाग्य ही है कि इस समय भी प्रदेश में सरदार सोभा सिंह के विभिन्न विषयों पर बनाए हुए सौ से अधिक मूल

उत्कृष्ट चित्र विद्यमान हैं। सरदार सोभा सिंह आर्ट गैलरी अन्द्रेटा में कलाकार के परिजनों के संरक्षण में लगभग पचास तस्वीरें सुरक्षित हैं। इसके अतिरिक्त शिमला के कैथू स्थित गुरुद्वारा में गुरुनानक की पेन्टिंग, चौड़ा-मैदान के गंडोत्र-परिवार के पास रिवालसर का लैण्डस्केप और सिरमौर के जिलाधीश कार्यालय में डा० यशवन्त सिंह परमार का सुन्दर पोर्ट्रेट और विस्थापित तिब्बती- धर्मगुरु दलाई लामा सहित बौद्ध धर्मगुरुओं के सुन्दर चित्र भी उन्होंने बनाए। सिद्धबाड़ी (धर्मशाला) में स्वामी चिन्मयानन्द के साथ मधुर सम्बन्धों के चलते उनका एक आदमकद चित्र भी उन्होंने उकेरा। कलाकार के पिता व दादा क्योंकि सेना में सेवारत रहे थे, इसलिए इस प्रभाव के चलते इन्होंने विभिन्न सैन्य अधिकारियों व शहीदों के चित्र भी बनाए। सरदार सोभा सिंह जी के द्वारा बनाए गए विभिन्न चित्रों में सोहनी-महिवाल का चित्र अत्यन्त मार्मिक बन पड़ा है। कांगड़ा घाटी से सम्बन्धित विभिन्न चित्रों से हिमाचल की सामाजिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि की झलक स्पष्ट दिखाई देती है। इन्होंने कांगड़ा-घाटी और हिमाचल की चित्रकला के प्रचार और प्रसार के लिए डा० कर्ण सिंह के संरक्षण में 'कांगड़ा कला केन्द्र' नामक संस्था की स्थापना भी की।

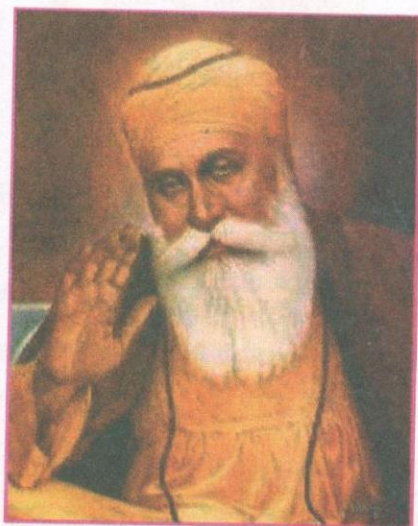
यद्यपि सरदार सोभा सिंह को अपने जीवनकाल में पंजाब के अमृतसर, पटियाला एवं चण्डीगढ़ के अतिरिक्त विदेशों में कैंनेडा, इंग्लैण्ड और अमेरिका में बसने के निमंत्रण भी मिले परन्तु इन्होंने हिमाचल और विशेष रूप से धौलाधार के आंचल में स्थित अन्द्रेटा गांव के प्राकृतिक सौन्दर्य के वशीभूत होने के कारण उन सभी आग्रहों को अस्वीकार कर दिया था। इनके जीवन का एक महत्वपूर्ण पहलू उनका पत्राचार रहा है। साहित्यकारों, पत्रकारों, शिक्षाविदों, फ़िल्मी-कलाकारों, राज-नेताओं, श्रद्धालुओं, प्रशंसकों, आम लोगों तथा अन्तर्गत जनों से इनका पत्र व्यवहार निरन्तर जीवन पर्यन्त जारी रहा। साहित्यकार नानक सिंह, भाई वीर सिंह, अमृता प्रीतम, अभिनेता पृथ्वी राज कपूर के साथ-साथ डा० कर्ण सिंह, पटियाला के महाराजा यादविन्द्र सिंह, मण्डी के राजा जोगिन्द्र सेन, राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद, डा० राधाकृष्णन, वी० वी० गिरि, नीलम संजीवा रेड्डी व जेल सिंह तथा गुरु नानक विश्वविद्यालय के संस्थापक कुलपति डा० बिशन सिंह समुद्री आदि के साथ इनका पत्राचार निरन्तर चलता रहा। पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला ने सरदार सोभा सिंह जी को डी० लिट्० की मानद उपाधि से भी अलंकृत किया। इनके पत्रों के माध्यम से इनके प्रकृति और सौन्दर्य के प्रति प्रेम तथा जीवन-दर्शन की झलक मिलती है।

सरदार सोभा सिंह का देहावसान अगस्त 1986 में हुआ। उनकी कला-दीर्घा की सम्भाल इनके परिजन कर रहे हैं। यह दीर्घा प्रातः 10 बजे से सांय 5 बजे तक खुली रहती है। इसमें विद्यमान चित्रों और अन्य प्रदर्शित सामान के लिए गैलरी का आकार छोटा जान पड़ता है इसलिए परिजनों की इसको एक बड़ी कला-दीर्घा में विकसित करने की योजना है। वर्ष 2001-2002

मैं सोभा सिंह जन्मशती के अवसर पर इनके सम्मान-स्वरूप कालू दी हट्टी (पालमपुर) से अन्द्रेटा तक लगभग 11 किलोमीटर सड़क का नाम 'सरदार सोभा सिंह मार्ग' एवं राजकीय उच्च विद्यालय अन्द्रेटा का नाम कलाकार सोभा सिंह के नाम पर कर दिया गया है। तत्कालीन मुख्यमंत्री प्रो० प्रेम कुमार धूमल ने व्यक्तिगत रुचि लेकर वर्ष 2002 का सरकारी कैलेन्डर सरदार सोभा सिंह को समर्पित किया था और ग्यारह हजार रुपए राशि का 'सरदार सोभा सिंह कला पुरस्कार' प्रारम्भ किया गया था।

सरदार सोभा सिंह जी धौलाधार के सन्त थे और धौलाधार के समान ही शान्त, निर्मल, निरभ्र और पुरातन थे। कलाकार के चित्रों के साथ-साथ उनके अनेक लेखों में भी धौलाधार के प्रति अगाध प्रेम प्रकट हुआ है। उनका कहना था— 'मैं धौलाधार के आंचल में इसलिए आ बसा हूँ क्योंकि इन पर्वत, घाटियों में शान्ति है। मन में शून्यता-सा एकांत आ बसता है। यह सृजन के लिए स्वर्गानुभूति की अवस्था है।' रंग और तूलिका के जादूगर सरदार सोभा सिंह तस्वीरों के चित्रण के अतिरिक्त अन्य कामों को भी पूरी लगन व तत्परता से करते थे। इनका व्यक्तित्व हर पहलू से परिपूर्ण था। यह अपने चित्रों के माध्यम से इन्सानियत और भाईचारे का एक ऐसा संदेश छोड़ गए जो युगों-युगों तक आदमी को 'इंसान' बनने की प्रेरणा हमेशा देता रहेगा। सरदार सोभा सिंह जी की अक्षय-कीर्ति से सम्पूर्ण हिमाचल प्रदेश एवं कांगड़ा घाटी सदैव सुरभित होती रहेगी।

सरदार सोभा सिंह के कुछ अमर चित्र



श्री गुरु नानक देव जी



कांगड़ा की दुल्हन



गद्दन



पंजाबी दुल्हन

प्रश्न-अभ्यास

- प्रश्न 1.** 1942 से नोरहा रिचर्डस से मिलने पहुँचे सरदार सोभा सिंह पर अन्द्रेटा के वातावरण का क्या प्रभाव पड़ा ?
- प्रश्न 2.** 1947 से भारत विभाजन के पश्चात् सोभा सिंह ने अन्द्रेटा में कुछ दिन कैसे बिताए ?
- प्रश्न 3.** सोभा सिंह द्वारा बनाए चित्रों का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
- प्रश्न 4.** सोभा सिंह का पत्र-व्यवहार किन लोगों से रहा ? उनके द्वारा बनाए प्रसिद्ध पोर्ट्रेट किन महापुरुषों और नेताओं के हैं ?
- प्रश्न 5.** सरदार सोभा सिंह को धौलाधार का सन्त क्यों कहा जाता है ?

शब्दार्थ और टिप्पणी

भीति	—	दीवारों पर अंकित चित्र
अन्तराल	—	अवकाश, खाली समय
सुअवसर	—	अच्छा अवसर
संचालित	—	चलाई जाने वाली
गतिविधियों	—	क्रियाकलाप
आच्छादित	—	ढके हुए
मनभावन	—	मन को भाने वाला
विस्थापितों	—	अपने स्थान से निकाले हुए लोग
रमणीय	—	सुन्दर
उत्कृष्ट	—	श्रेष्ठ
अलंकृत	—	शोभित, सज्जित
दीर्घा	—	गैलरी, कक्ष
परिजनों	—	सम्बन्धियों
सुरभित	—	सुगन्धित

—०—०—०—